राजस्थानी ई-पत्रिका

नेगचार

16 मार्च, 2024 बरस-02, अंक-48

श्री सांवर दइया री ओळूं मांय-

राजस्थानी ई-पत्रिका

नेगचार (पखवाड़ियो)

16 मार्च, 2024; बरस-02, अंक-48

मोल- हेताळुवां री मुळक

संपादक-मंडळ (अवैतनिक)

डॉ. आईदान सिंह भाटी, डॉ. मंगत बादल,

बुलाकी शर्मा, अतुल कनक, डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

प्रबंध संपादक- संदीप भाटी, प्रांजल दइया

मानद संपादक - डॉ. नीरज दइया

wpnegchar@gmail.com

ठावो ठिकाणो-

सी-107, वल्लभ गार्डन,

पवनपुरी, बीकानेर- 3340003 (राजस्थान)

मो. 8619614360

आवरण चित्र -किरण राजपुरोहित

kavitakosh.org/negchar

negchar.blogspot.com

negchar.wordpress.com

पत्रिका मांय प्रगट विचार लेखकां रा निजू है।
सगळै विचारां सूं संपादक रो सहमत होवणो जरूरी कोनी।

'नेगचार' मांय सामिल सामग्री रा सगळा अधिकार संकलित रचनाकारां रा है, जे आप किणी रचना नै बरतणी चावो तो किरपा कर नै मूळ रचनाकारां अर नेगचार सूं मंजूरी अवस लेवणी चाइजै। चित्र साभार- गूगल।

सगळा कारज- अव्यावसायिक अर अवैतनिक
न्याय खेतर फगत अर फगत बीकानेर (राजस्थान)

राजस्थानी री सेवा

मानदेय देवणो चावां, पण अबार
फूल सारू पांखड़ी ई संभव कोनी।

विगत

बंतळ-

डॉ. राजपुरोहित सूं **महेंद्र सिंह छायण** री बंतळ
राजनैतिक उदासीनता रै कारण राजस्थानी नै
संवैधानिक मान्यता नीं मिळ सकी

अनुसिरजण-

कवितावां/ **नन्दकिशोर आचार्य**
अनुवाद- **नीरज दइया**

गीत-

फागण आयो रे/ **बुलाकी दास बावरा**
होळी गावण दे/ **कल्याणसिंह राजावत**

व्यंग्य-

भोगी अणभोगी लालसावां/ **डॉ.मनमोहन सिंह यादव**
माफी री राजनीति/ **प्रहलाद श्रीमाली**
बुलाकी शर्मा री डायरी- पैला हिंदुस्तान
ईमानदारी अर मिनखीचारै सारू ओळखीजतो

बातां सिनेमा री-

रंगा रै तैंवार माथै आपरी निजर सनीमा रा रंग/
अरविंद आशिया

परख-

किशोर कुमार निर्वाण अर **राजूराम**
बिजारणिया री पोथ्यां **पूर्ण शर्मा 'पूरण'**
अर **किरण बाला 'किरन'** री टीप
अबै म्हारी बारी/ **डॉ. नीरज दइया**
सीख/ **कृष्ण बृहस्पति**
सपना वर्मा री कविता रो
अंग्रेजी अनुवाद/ **रजनी छाबड़ा**

ख्यातनाम कवि-आलोचक डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित सूं प्रतिष्ठित युवा साहित्यकार महेंद्र सिंह छायण री बंतळ

राजनैतिक उदासीनता रै कारण राजस्थानी नै संवैधानिक मान्यता नीं मिळ सकी : डॉ. गजेसिंह

♦ आपरी राजस्थानी काव्यकृति 'पळकती प्रीत' कांई है?

– पळकती प्रीत राजस्थान रै मध्यकालीन राजस्थानी प्रेमाख्यांन नै आधुनिक दीठ रै परवांणै मानवीय संवेदना सूं परिपूरण प्रबंध काव्य रै रूप में अेक नवौ सिरजण है। इण मांय मूमल-महेन्दर, ढोला-मारू, जेठवा-ऊजळी, बाघो-भारमली, नरबद-सुपियारदे, सैणी-बीझाणंद, आभल-खींवजी, नागजी-नागवती, जलाल-बूबना, सोरठ -बींझौ, केहर-कंवळ जैड़ा जगचावा ग्यारह प्रेमाख्यानां रौ आधुनिक दीठ सूं कविता रूप में सिरजण हुयौ है।

♦ साहित्य अकादेमी रै इण सिरै अवार्ड रै अंतरगत कांई मिळै?

– साहित्य अकादेमी अवार्ड हरेक रचनाकार रै जीवण रौ अेक सुपनौ हुवै। साहित्य जगत मांय औ सै सूं सिरै अवार्ड है इण सारू हरेक रचनाकार इणनै आपरौ सौभाग्य मानै। इण पुरस्कार रै अंतरगत ताम्र फलक, शॉल, श्रीफळ, सैनांणी अर अेक लाख रिपिया ससम्मान मिळै।

♦ आप आ पोथी अर औ पुरस्कार किण नै समरपित करियौ अर क्यूं?

– असल में राजस्थानी भासा-साहित्य मांय म्हनै ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ.) अर्जुनदेव चारण रौ घणौ महताऊ सानिध्य मिल्यौ। वां सूं सदैव कीं न कीं सीखण नै मिल्यौ। जे आ केय दूं कै वे म्हारै सिरजण रा आदर्स है तो कोई अजोगती बात कोनी। कोराना काळ रै दरम्यान लिख्योड़ी आ पोथी म्है वां नै इज समरपित कीनी है सो औ पुरस्कार श्रद्धेय डा. अर्जुनदेव चारण नै समरपित करता म्हनै घणौ अंजस है।

♦ राजस्थानी भासा-साहित्य नै लेय'र आज रौ युवा कांई सोच रेयौ है?

– राजस्थानी भासा-साहित्य नै लेय'र आज रौ युवा घणौ सकारात्मक है। वो आपरी मायड़ भासा अर साहित्य सूं हदभांत जुड़ियोड़ौ है। लगौलग महताऊ सिरजण कर रैयौ है। इणरी संवैधानिक मान्यता नै लेय'र घणौ सजग अर सावचेत है। औ इज कारण है कै प्रदेस मांय आज रौ युवा राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता रै आंदोलन में आपरी सबळी भूमिका निभाय रैयौ है।

♦ आधुनिक राजस्थानी मांय महिला लेखिकावां किण भांत सिरजण कर रैयी है?

– राजस्थानी समाज में महिलावां माथै सदैव दौवड़ी जिम्मेवारी रैयी पण महताऊ बात आ है कै राजस्थानी साहित्य में वे सदैव सारथक सिरजण करती रैयी। आज गुमेज री बात तो आ है कै आधुनिक साहित्य री सगळी विधावां मांय राजस्थानी महिलावां भारतीय भासावां रै जोड़ाजोड़ सिरजण कर रैयी है।

राजस्थानी भासा-साहित्य नै लेय'र आज रौ युवा घणौ सकारात्मक है। वो आपरी मायड़ भासा अर साहित्य सूं हदभांत जुड़ियोड़ौ है। लगौलग महताऊ सिरजण कर रैयौ है। इणरी संवैधानिक मान्यता नै लेय'र घणौ सजग अर सावचेत है। औ इज कारण है कै प्रदेस मांय आज रौ युवा राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता रै आंदोलन में आपरी सबळी भूमिका निभाय रैयौ है।

♦ आधुनिक काल में दूजी भासावां री जोड़ में आप राजस्थानी री विधावां नै किण रूप में मानौ ?

– राजस्थानी रौ साहित्य आदिकाल सूं सिमरध रैयो हैं। भारतीय भासावां रै परिपेख में देखां तो दूजी भासावां सूं ई पैला राजस्थानी में गद्य रौ विगसाव हुयौ हैं। मध्यकालीन राजस्थानी में पट्टा – परवाना, रुका, बहियां, दवावैत वचनिका आद गद्य शैलियां में बोहळायत में रचनावां मिली। आधुनिक काल रै परिपेख में देखां तो कविता, कहाणी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, आलोचना आद विधावां में मोकळौ सिरजण होय रैयौ हैं, जकौ विश्व री किणी भासा सूं कमती नीं हैं। समै रै परवांण विसय ई आज रै अनुरूप अर आधुनिकताबोध सूं सराबोर हैं। आज राजस्थानी साहित्य भारतीय साहित्य रै जोड़ाजोड़ ऊभौ है।

♦ आपरी दीठ में एक 'कवि' सामान्य लोगां सूं अलग व्है?

– भारतीय वाङ्मय में कवि ने प्रजापति यानि बिरमा रै बराबर मानीज्यौ हैं। कवि समाज में नव-सिरजण रौ काम करिया करै। वौ संवेदनशील व्हिया करै। औ इज कारण हैं कै वौ पशु-पंखी, मांणस जात आद री पीड़ा नै अपणी सम'र जीवै अर भोगै, सबदां रौ खोळियौ देय'र लोक रै सांमी राखै। सामान्य लोग दूजां रै सुख-दुख अर पीड़ नै अपणी नीं बणा सकै, पण कवि बणाया करै। औ इज कारण हैं कै वौ सामान्य लोगां सूं सोचण-समझण अर लिखण री दीठ सूं अलग व्हिया करै।

♦ अबार आप जेएनवीयू रै राजस्थानी विभाग रा विभागाध्यक्ष हौ। राजस्थानी भाषा-साहित्य रै सारूं कांई योजनावां है आपरी ?

– राजस्थानी विभाग रै विभागाध्यक्ष रूप में दूजी वळा म्हनै सेवा करण रौ अवसर मिल्यौ है। अठै केई शोधार्थी आपणी भासा अर संस्कृति रै महताऊ विसयां माथै शोधरत हैं, जिणारै शोध सूं राजस्थानी साहित्य में वधापौ होवैला, साथै ई शोध री दीठ सूं नूंवा प्रतिमान थापित होवैला। राजस्थानी विभाग लगोलग सांस्कृतिक अर साहित्यिक गतिविधियां रै माध्यम सूं युवा रचनाकार नै प्रोत्साहित करण रौ काम ई कर रैयो हैं।

♦ कांई राजस्थान में प्राथमिक सिक्सा अपांरी मायड़ भासा में संभव है?

– हां, बिलकुल संभव है। नवी सिक्सा नीति रै त्हैत अबै आ आस घणी प्रबळ हुयी है। देस अर दुनिया रा तमाम भासाविद आ मानै कै टाबरा नै प्राथमिक सिक्सा वांरी मायड़ भासा में इज मिलणी चाहीजै। पण राजस्थान में उल्टी गंगा चालती दीसै क्यूकै अठै उच्च सिक्सा रै अंतरगत बारवीं सूं लैय%र अेम.अे. अर पीएच-डी. तांई अपांरी मायड़ भासा राजस्थानी मांय भणाई हुवै पण दुरभाग सूं अठै री प्राथमिक सिक्सा मांय टाबरां नै आपरी मायड़ भासा में भणाई रौ हक अजै तांई नीं मिळियौ। अबै प्रदेस में नवी सिक्सा नीति रै त्हैत प्रबळ आस जगी है कै अठै रा टाबरा नै ओ हक बेगौ ई मिळैला। ..... निस्चैई ई मिलणौ ई चाहीजै।

♦ आप आपरी साहित्यिक जातरा नै किण रूप में देखौ ?

– म्हैं आज जद साहित्य अकादमी अवार्ड मिलण री बखत म्हारी साहित्यिक जातरा नै निरखूं-परखूं तो लखावै कै आ ईश्वर री इज किरपा हैं, जकौ म्हनै इण दिसा में प्रवृत्त करियौ। घर में न कोई साहित्यकार हौ अर न कोई परिवेस हौ। ठेठ गांवाऊ परिवेस सूं निकल'र इत्ती तक पूगणौ म्हारै सारूं अंजस री बात हैं। बाळपणै में

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

जलम– जलम 14 जून, 1974 निंबोल (पाली)

सिक्सा– अेम.अे. पीअेच-डी.

♦ प्रकासित पोथियां–

मौलिक – 1. जस रा आखर (राजस्थानी काव्य-2006), 2. राजहंस (साहित्य शोध ग्रंथ-2008), 3. आत्मदर्शन (स्मृति ग्रंथ-2010), 4. राजपुरोहित – आदिकाल से आजलग (शोध ग्रंथ-2018), 5. पळकती प्रीत (राजस्थानी काव्य-2020), 6. राजस्थानी साहित्य री सौरम (आलोचना-2020) 7. ऊमरदान लाळस (राजस्थानी विनिबंध-2021)

संपादित पोथियां –

1. सुजा शतक (वीरांगना सुजा-2007), 2. अंजस (राजस्थानी शोध-2015), 3. साहित्य-सुजस (12वीं मा.शि. बोर्ड राजस्थान-2017), 4. अंजस रा आखर (10वीं राज.स्टेट ओ. स्कूल-2017), 5. वीर दुर्गादास राठौड़ (ओळखाण-2018), 6. परिसर (ज.ना.वि.वि. समाचार पत्र-2018), 7. राजस्थानी लोक देवी देवता – परम्परा अर साहित्यिक दीठ (शोध ग्रंथ-2022), 8. राजस्थानी-हिन्दी मुहावरा कोश (2023), 9. राजस्थानी-हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश (2023)

♦ पुरस्कार मान-सम्मान–

वीर दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति जोधपुर सूं वीरवर दुर्गादास राठौड़ अवार्ड 2004, राजमाता साहिबा श्रीमती कृष्णा कुमारीजी मारवाड़-जोधपुर सूं सिरोपाव सम्मान 2008, श्रीआत्मधाम ट्रस्ट, बाड़वा, पाली सूं स्वामी आत्मानन्द सरस्वती साहित्य पुरस्कार 2008, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश मेहरानगढ, जोधपुर सूं राजस्थानी भाषा-साहित्य सेवा सम्मान 2019, सिटिजन्स सोसायटी फॉर एज्यूकेशन, जोधपुर सूं डॉ. नृसिंह राजपुरोहित राजस्थानी साहित्य पुरस्कार 2020, ज्ञान भारती संस्थान कोटा सूं गौरीशंकर कमलेश स्मृति भाषा-साहित्य पुरस्कार 2022, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर सूं कुलपति सम्मान 2024 अर देवमुनि साहित्य संस्थान खंदरा-पाली सूं सदगुरु देवमुनि साहित्य पुरस्कार 2024 उल्लेखजोग।

♦ अबार– जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर रै राजस्थानी विभाग मांय विभागाध्यक्ष अर बाबा रामदेव शोधपीठ में निदेशक रै रूप में महताऊ सेवावां सेवावां दैय रैया है।

ठावो ठिकाणो–3 ई/ 2 विश्वविद्यालय स्टाफ कॉलोनी,
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.) 342011

मो. 9928418822, 9460924400

ई-मेल– gsnimbol@gmail.com

कवि डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित नै अकादेमी सर्वोच्च पुरस्कार

राजस्थानी भाषा रा प्रतिष्ठित कवि-आलोचक डा. गजेसिंह राजपुरोहित नै राजस्थानी काव्य-कृति 'पळकती प्रीत' खातर साहित्य अकादेमी सूं राष्ट्रीय पुरस्कार अर्पण समारोह में साहित्य अकादेमी सर्वोच्च राजस्थानी पुरस्कार 2023 अरपण करीज्यो। अकादेमी रा सचिव के. श्रीनिवास राव बतायो कै साहित्य अकादेमी रा अध्यक्ष अर चावा-ठावा लेखक माधव कौशिक री अध्यक्षता नै ख्यातनाम उड़िया लेखिका प्रतिभा राय रै मुख्य आतिथ्य में मंगलवार 12 मार्च नै सिंझ्या 5 बजी कमानी सभागार में आयोजित साहित्य अकादेमी रै राष्ट्रीय पुरस्कार अर्पण समारोह में डा. राजपुरोहित नै अरपण करतां एक लाख रुपए रो चेक, प्रशस्ति-पत्र, ताम्र फलक अर श्रीफल प्रदान कर'र पुरस्कृत करिया गया। समारोह में अकादेमी सचिव के. श्रीनिवासराव स्वागत उद्बोधन दियो अर अकादेमी उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा धन्यवाद ज्ञापित करियो।

ख्यातनाम रचनाकारां दी बधाई- राजस्थानी भाषा रा ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रो.(डा.) अर्जुनदेव चारण, नंदकिशोर आचार्य, शाइर शीन क़ाफ निजाम, नंद भारद्वाज, मधु आचार्य, प्रो.(डा.) माधव हाडा, डा.सी.पी.देवल, प्रोफेसर कौशल नाथ उपाध्याय, डा.ब्रजरतन जोशी, दिनेश पांचाल, डा.गीता सामौर, हरिमोहन सारस्वत, मदनगोपाल लढा, दिनेश चारण, राजेन्द्र देथा, संजय आमेटा डा.राजपुरोहित नै बधाई दीवी।

लिखण-पढ़ण री रुचि ही अर इण रूचि रै पांण इज अेक-अेक पांवडौ आगै बधतौ रैयो हूं। इयां म्हारी पैली पोथी राजस्थानी काव्य संग्रै 'जस रा आखर' बरस 2006 में प्रकासित हुयी। इणरै पछै आज लग म्हारै मौलिक सिरजण री सात अर संपादन री दस पोथियां प्रकासित होय चुकी है। औ पुरस्कार इण साहित्य साधना रौ इज सारथक परिणाम हैं।

♦ देस री आजादी रै छियोत्तर बरसां पछै ई राजस्थानी भासा नै संवैधानिक मान्यता क्यूं नीं मिळी? आवण वाळा समै में इण भासा नै संवैधानिक मान्यता मिळैला कै नीं?

- आ बात सही है कै राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता रौ आंदोलन देस री आजादी सूं पैला ई चाल रैयौ है। राजस्थानी अेक सिमरध अर सुतंतर भासा है जिणनै अमेरिका अर नेपाल जैड़ा देस मान्यता दीनी। इणरौ जुगां जूनौ इतिहास अर विसाल साहित्य भंडार है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, महाविद्यालयां अर विश्वविद्यालयां में भणाई जावै। साहित्य अकादेमी कांनी सूं राजस्थानी लेखकां नै हर बरस भारतीय भासावां रै जोड़ाजोड़ पुरस्कार मिळै। यूजीसी पढेसरां नै पी-अेएच.डी. सारू स्कॉलरशिप देवै। चुणाव मांय राजनेता इणी'ज भासा मांय आम जन सूं वोट मांगै पण औ दुरभाग है कै प्रदेस रै राजनेतावां री उदासीनता रै कारण आजादी रै छियोत्तर बरसां पछै ई अपांरी मायड़ भासा संवैधानिक मान्यता नै तरस रैयी है। अठै जे म्हैं आ बात कैय दूं कै प्रदेस रै राजनेतावां री उदासीनता रै कारण अपांरी मायड़ भाषा राजस्थानी नै संवैधानिक मान्यता नीं मिळ सकी तो कोई अजोगती बात कोनीं। अबै औ मसलौ देस रा मानीता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी री मंसा माथै निरभर है। वे जद चावैला उणीज दिन राजस्थानी भासा नै संवैधानिक मान्यता मिळ जावैला। कह्यौ जावै कै आसा अमर धन हुवै सो म्हनै भरोसौ है कै आवण वाळा समै मांय अपांरी मायड़ भासा नै प्रदेस री सरकार पैली राजभासा अर केन्द्र सरकार संवैधानिक मान्यता प्रदान कर अवस ई संविधान री आठवीं अनुसूची में सामिल करेला। निस्चै ई हरेक राजस्थानी सारू सोनै रौ सूरज उण दिन ई उगैला जिण दिन राजस्थानी भासा नै संवैधानिक मान्यता मिळैला।

भेंटकर्त्ता : **महेंद्र सिंह छायण**

मो. 9587689188

अनुसिरजण–

ऊंडै अंधारै कठैई

जिका दिखावणो चावै खुद नै
बै जावै–
अंधारै सूं उजास कानी

म्हैं जिको
थारै मन–आंगणै
लेवणी चावूं नींद
ऊंडै अंधारै मांय कठैई–
उजास खातर क्यूं भटकूं
जिको कर देवै थारै सूं अळघो।

अंधारै ई ठीक

भलाई कोनी
म्हैं कठैई
थारै दीठाव मांय
अंधारै ई ठीक हूं
दीठाव सूं थाक'र
जद–जद मींचीजैला आंख्यां
लाधूंला म्हैं बठैई!

– **नन्दकिशोर आचार्य**

हिंदी सूं उलथो– **नीरज दइया**

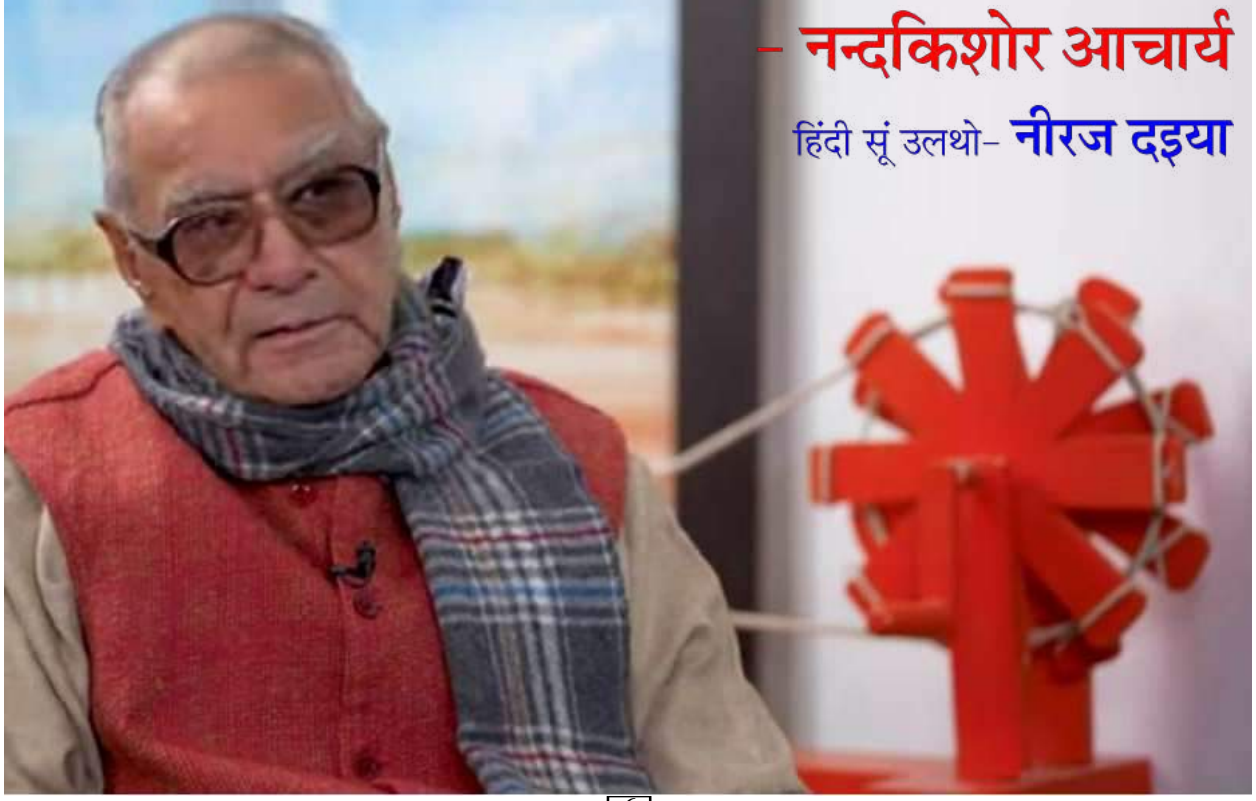

व्यंग्य-

भोगी अणभोगी लालसावां

डॉ.मनमोहन सिंह यादव

अनंत लालसांवां रै धणी अेक मिनख री लालसांवां कदैई मिटै ही कोयनीं। सांची बात तो आ है कै मिनख री लालसा मरियां ही मिटै। तृप्ति नीं आवै पण मसाण आ जावै। अेक लालसा मिटै ही नीं कै उणा सूं पैलां दूसरी लालसा आपरो मूंडो काढ लै। मिनख तो बापड़ो ही है, कितीक लालसांवां रा मूंडका चुकावै। मिनख री लालसा डाकण दांई हुवै। 'ज्यूं-ज्यूं भीजै कांबली त्यूं-त्यूं भारी होय।' लारलै जुगां री डाकणा अेक घर तो टाळती ही। पण आज रै जुग री मिजली, मरखणी अर निसरमी डाकणा खुद रै आंगणै मांय खड्यै मिनख नै भी ढोकळो बणाय लै। बीर काळजै मांय आठू पहर 'किण नै खांऊ अर किण नै बाडू' रो धुकधुकियो ही लागोड़ो रैवै। अणभै आळा मिनख कैवै कै मिनख री लालसा घणकरी बार सोट दियां हीं नीं मिटै। छेकड़ हंसलो उड्यां ही बींरी लालसा री हूंस अर हर मिटै। मिनख री लालसा रौ चांको ही नीं हुवै। सम्राट ययाति री लालसा मिटै तो मिनख री लालसा मिटै। लालसा रै मामलै मांय सैं सरीखा है। पांगळो चावै है कै म्हैं पहाड़ माथै पग धरूं, भूखो चावै कै म्हैं महल मांय बैठ'र मालपुआ खाऊं। कामुक मिनख चावै है कै म्हनै कंचन बरगी नार मिलै अर तपसी चावै कै म्हनै मुगती मिलै। मंगतीवाड़ो इसो है कै ठौड़-ठौड़ मंगता ही मंगता ऊभा है। ओ संसार है कै मंगता रौ मगरियो? ई मगरियै मांय लाखां मांय सूं कोई अेक ही मांगबायरो अर अनाग्रही मिनख मिलसी। ईं लालसा रै कारण ही मिनख जलम-मरण रो गिड़को काढै। घणकरीबार ईं गिड़कै मांय मिनख नै लागै है कै बीं नै सुख रा हींडा आवै। जे गौर सूं सोचां तो निगै आवै है कै जीव रो फकत ओ मीठो बैम ही है। ई बैम मांय मिनख री सांतरी ऊंघ है, अेक भांत री खुमारी है बीं में। ज्यूं अेक पांवली कुत्ती ने सूखै हाड नै चूसण मांय मजो आवै बित्तो ही मजो आवै मिनख नै आपरै बैम नै चूसण मांय। जिती ज्यादा लालसा, बित्तो ही ज्यादा भार अर बित्तो ही बीं नै रैवै तसियो। लालसा नीं दस माथां रै धणी रावण री पूरी हुवै अर नीं ही प्रहलाद भगत रै बाप हिरणाकुस री। धरती तोलणियां भी अठै धूड़ मांय रळग्या। मोहजनित भोगण री लालसा कदैई पूरी नीं हुवै।

ई बैम मांय मिनख री सांतरी ऊंघ है, अेक भांत री खुमारी है बीं में। ज्यूं अेक पांवली कुत्ती ने सूखै हाड नै चूसण मांय मजो आवै बित्तो ही मजो आवै मिनख नै आपरै बैम नै चूसण मांय। जिती ज्यादा लालसा, बित्तो ही ज्यादा भार अर बित्तो ही बीं नै रैवै तसियो। लालसा नीं दस माथां रै धणी रावण री पूरी हुवै अर नीं ही प्रहलाद भगत रै बाप हिरणाकुस री।...

पोथ्यां मांय अेक कहाणी आवै गुरुजी री मैहर सूं अेक ऊंदरो मिनकी बणग्यो। मिनकी सूं पछै कुत्तो भी बणग्यो। कुत्तो बण्या सूं भी बीं कुत्तै रो जी नीं भरियो। बो आपरै कुत्तापणै सूं नीं धाप्यौ तो पूठो गुरुजी रै खनै जाय'र पूंछ हिलावंतो बोल्यो- 'अेक छेकड़ली लालसा औरूं पूरी कर दो पछै थानै कदैई फोड़ा नीं घालूं।' गुरुजी री मैहर सूं बौ लालची लिगतौ कुत्तो शेर बणग्यौ। शेर बणतां ही बीं में शेरपणो भी आग्यो। बो सेर सू सवा सेर होयग्यो। दहाड़ पणो'र गुरुजी खांनी झपट्यो अर पाधरो पंजो मारियो, बीं रो डोळ देख'र गुरुजी बोल्या- पुर्नमूषिकोभव, 'ई ब्यावां रा तो इसा ही नेग हुवै।'

म्हारो अेक बेली है मंगतूराम खाती। लकड़ी रो अेक नंबर रो कारीगर। सगळै चौखळ मांय बीं रो नांव हो अर बित्ती ही बीरी चौखळै मांय साख ही। सुतर सूं चालै हो इण सारू च्यार पईसा भी जोड़ लिया। मैणतभोगी मिनख है, इण सारू च्यारां खानी हाथ-पग मारण री आदत है। चौमासै मांय खेती भी जी तोड़'र करतो। लोग अचरज करै हा कै च्यार पईसा खनै होवण रै पछै भी मंगतूराम काळै बळद दांई क्यूं खस्सै है? चौमासै रै बगत अेक दिन खेत मांय ऊभो अेक मजूर नै ऊडीकै हो। मेह रो पाणी ओटण खातर कुंड चिणावणी चावै हो। घणी ताळ तांई मजूर नै ऊडीक्यो। पण जद बो नीं आयो तो सोच्यो- लै जीवड़ा फावड़ा चलाय'र खुद ही खेचळ करलूं। पसवाड़ै पड्यै पावड़ै नै उठाय'र जमीं माथै दे मारियो। ओजूं पांच अेक फुट खाडो खुदयो ही हो कै थोड़ो थाकग्यो। फावड़ै नै खाडै मांय छोड'र बारै निसरियो अर खाडै री पाळ माथै उकड़ू बैठ'र थोड़ी ताळ बिसांई खावण लाग्यो। दस मिंट सुस्तापणो र ऊभो हुयो अर खाडै मांय पूठो जाय'र फावड़ो मारियो तो जोर सूं टण्ण री आवाज करतो फावड़ो पाधरो माथै पर आयो। बीं नै लाग्यो कै जमीं रै हेठै कीं भरमा चीज है। फावड़ै नै पसवाड़ै राख'र हेठै खाडै मांय बैठ'र रेत मांय हाथ घाल्यौ। जद बो खाडै री ऊपरली धूड़ नै हटाई तो बींरी आंख्यां

मांय इचरज नाच ऊठ्यो, बीं नै तांबै रो अेक ठांव जिसो कीं दीस्यो तो बीं ठांव रै आसै पासै जमोड़ी धूड़ नै हटाई अर बीं ठांव नै खाडै री पाळ माथै धरदियो। इन्नै-बीन्नै देख'र बींरी ढकणी खोली तो बींरी आंख्यां फाटी री फाटी रैयगी। ठेठ तांईं गैणा-गांठां सूं काठी भरोड़ी। मंगतूराम रो भाग जाग्यो। छिण भर मांय लखपति सूं करोड़पति बणग्यौ। खैर! करोड़पति बणतां ही बिरी लालसा रा कजलाईजोड़ा खीरा बळबळता हुग्या। मन मांय सोच्यौ अबै करोड़पति सूं अरबपति बणनै में देर नीं है। सायरा सांची कैई है कै पईसा आंवतां ही मिनख खुद मांय नीं मावै। बो आपरी काया सूं बारै निकळ'र हैठै दुळण लाग ज्यावै। अेक दिन भाग्यो भाग्यो मंगतूराम आपरै सगै खनै गयो। आपरी मन मांयली बात नै होठां माथै लांवतो बोल्यो- मालक री मैहर हुई है च्यार पईसा बापरग्या। सोचूं हूं लकड़ी रो मोटो बौपार करल्यूं, थांकी कांई राय है? सगो बोल्यो- कीं दूसरो धंधो करल्यो, छोडा छीलतां पीढ्यां बीतगी। मंगतूराम बोल्यो- ऊंदरा रा जायौड़ा तो बिल ही खोद सकै। बिल खोदण री जरूत ही नीं है, जमानो बदळग्यो। मिनख अणूता ही तरक्की मांय है थे ही ऊंदरा सू सांप बणज्यावो। थे खाली खोळियो बदळ लो। सांप बण्या पछै खोया-खुदाया बिल मिलसी। दावै जिकै ही बिल मांय बड़'र मालपुवा खा लीज्यौ। मंगतूराम बोल्यो- साफ-साफ कैवो म्हनै कांई करणौ है? बो बोल्यौ- विश्वकर्मा भगवान नै हाथ जोड़'र देवी लिछमी रै धोक लगाय लो। लोग जोत सूं जोत जोड़ै है, थे पईसा सूं पईसा जोड़ लो। छीणी, हथौड़ा अर रंदै नै ओढैसर लगाय'र ब्याज रो बौपार कर लो। लोगां नै ब्याजूणा पईसा देवो अर बांसू पांच री मिती रो सूद सूंतो। सगो जी री बात सुण'र मंगतराम रो काळजो ठंडो हुग्यो। सगै री बात बीं रै हाडौहाड बैठगी। अब शुभ काम मांय देरी कांयरी। सगै रै घर सूं सिरावण करपणो'र मंगतूराम आपरै घरां पूग्यो दोय दिनां पछै लिछमी जी री पूजा कर पणो'र ब्याज रो धंधो सरू करियो, महीणै भर मांय सूद रै लालच सूं मंगतूराम आपरी घणकरी जमां पूंजी नै च्यारूमेर खिंडाय दी। भांत-भांत रा छंटेळ अर छागटा मिनख बीं नै सूद रौ लालच दे'र बीरी लारै बच्योड़ी रकम नै भी झूट ली अर बीं नै सापड़दै तिरी गिटायंता रैया। जद तगादै रो टैम हुयो तो लैवण्यार बीं रै सामी नागी तलवारां काढ ली, अबै देवाळ आगै-आगै अर बै लैवाळ लारै-लारै। पईसो चीज ही ईसी हुवै है, हाथ सूं परबारै हुंता ही आपरो धणियाप खो देवै, हाथ सूं छूटतां ही पईसो आपरो असली उणियारो बतावै अर बो मिनख रै बेलीपण अर बौपार दोनां नै बैरी कर देवै। मांगतोड़ा सगळा अेको कर लियो। पोलपटी देख'र बै सगळा पुलिस-थाणै पूग्या। गांव मांय पुलिस नै लाय'र मंगतूराम नै घेर लियो। मंगतूराम कनै पईसा उधार देवण रो लाइसैंस नीं हो। पुलिस नै जद ठाह पड्यो तो पुलिस आळा बीं नै इयां फंफेड्यो जाणै मिनकी कबूतर नै फंफेड़े। छेकड़ च्यार पईसा देय'र पुलिस सूं गैल छुडाई। उधार लेवण नै आळै मिनखां नै मजो मिळग्यो। बै सगळा आपरै बचनां सूं मुकरग्या ब्याज तो गयो खोखा खांवतौ सागै मूलधन भी डूबग्यो। सैं जाणै कै लालसा रै बारूद माथै बैठै मिनख नै नीं लाय दीखै अर नीं ही बलाय।

मो. 9460021851

बुलाकी दास बावरा

फागण आयो रे

झूम गांवतो, ओ मदमातो, महिनो आयो रे।
रंग उड़ातो, फाग खेलतो, फागण आयो रे॥

उन्मादी बायरियो छेड़े बांसुरियां री तान,
छैल-छबीली आ अलबेली पून चलावै बाण,
मिनख मतवाळा नाचै रे आ धरती मैंदी राचै रे,
आज जमीं रे हाथां आभो गाल रंगायो रे।

कर सोळै सिणगार रितु अब खेलण लागी फाग,
सगळां रै माथां पर सौवै फूलगुलाबी पाग,
दिसावां झूमै गावै रे लुगायां मन भरमावै रे,
आज प्यार रै पनघट माथै मेळो मचग्यो रे।

तबला देवै ताल मंदिरां मांय छिड़ी मिरदंग,
पड़े डांडिया, गळी-गळी में गूंजण लागी चंग
लावणी चौमासे रा गीत सुरीलो सरगम रो संगीत,
आज बहारां रै पग रुणझुण घुंघरू बाज्यो रे।

रंग-सुरंगी सड़कां, माथै उड रही लाल गुलाल,
गोखै बैठी गोरड्यां रा मत पूछो थे हाल,
नैण री नैणां सूं है बात ऊपर सूं इमरत री बरसात,
कजरारी आंख्यां रो काजळ ठुमकण लाग्यो रे।

रस्ते बै'ती राधा आगै रुकग्यो मोहनियो,
रंग मती नाख छैल-भंवर म्हारो भीजै ओढणियो,
सास म्हनै ताना मारैला बा बैरण बुरी बिचारैला,
मारग नै दै छोड आभै सूं सूरज ढळ रह्यो रे।

हिय-हरखातै हेड़ाऊजी सूं सज रह्यो बारह गुवाड़,
डागां-बिस्सां बीनै थामी नौटंकी री नाड़,
होय रैयी रमतां री भरमार, अमरसिंह थाम रैयो तलवार,
अचारजां में हाड़ी नूवों अलख जगायो रे।

चारूं फेरी नवरस घुळ रह्या तिरमिर भरया कढ़ाव,
बीकाणै री बस्ती'र जाणै बरसाणै रो गांव,
छूट रैयो पिचकार्यां सूं रंग डोलच्यां सूं छायो नवरंग,
हरषां-व्यासां रा दिल भीज्या नेह बढ़ायो रे।

दम्माण्यां में स्सै गेवरिया खेलै रळ-मिल खेल,
रंग उडाता, धूम मचाता, कर रह्या ठेलमठेल,
चहूं दिस खुशियां है भरपूर 'बावरा' सै नसै में चूर,
मन रा मोती पोय, सग्यां से मन ललचायो रे,
झूम गांवतो, ओ मदमातो, महिनो आयो रे॥
रंग उड़ातो, फाग खेलतो, फागण आयो रे॥

(पोथी- **पणिहारी** सूं)

व्यंग्य-

माफी री राजनीति

प्रहलाद श्रीमाली

क्षमा करणियो महान होवे, बड़ो मानीजै। आध्यात्म रा क्षेत्र में तो आ बात साव साची है। पण राजनीति में ओ फॉर्मूलो कोनी चालै। राजनीति रै हिसाब सूं माफ करणियो प्राणी दूरदृष्टि राखणियो घाघ तत्व होवै। वो जाणै कै राजनेता रो जमारो लियो है तो तोड़-फोड़, जोड़-मोड़, घाल-मेल, ऊंच-नीच करणी 'ज पड़सी। अैडा में माफी री लेण-देण %सेफ्टी वाल्व' रो काम करे। जो सुरक्षा पेटे जरूरी है। सो माफीतणी उदारता राजनीति री भावती मजबूरी है।

क्षमा वीर मिनखां अर करमवीर लुगाइयां रो भूषण मानीजै। पण माफी राजनीति में मानीतो टोटको है। राजनीति री माफी कोरी माफी कोनी। इण माफी में हेताळो आश्वासन है। आज थां म्हने माफ कर रैया हो! तो बखत पड्यां म्हैं ई थांनै माफ करुंला! आ तो वेवार री हांती है। रखपत-रखापत, आदान-प्रदान तो समता रो संदेश है। बराबरी वाळी बात। राजनीति में समर्थन मांगण सूं कोनी मिळै। पण माफी मिळ जावै। समर्थन लेवण सारू कोई प्रलोभन देवणो पड़ै। माफी खुद ठावको प्रलोभन है। अेकदम पेटेंट टाइप। माफी देवण वाळा नै विश्वास है। जरूरत माथै म्हनै ई अठासूं माफी मांगतां ई मिळ जासी। यूं समाज री माफी वाळी वीरता राजनीति में आय'र व्यवहारिकता में बदल जावै। आ राजनीति री महानता है। कै मिनख नै हाथूं-हाथ व्यवहारिक बणाय नांखै। जणै कै वीर होवणो हरेक रै हाथ री बात कोनी।

माफी री राजनीति में सीदी तरियां माफी नीं मिळै। तिकडम सूं हासिल करण अर नटण रा नुस्खा चालै। इण में माफी झपटी-हडपी जावै। जरूरत पड्यां धाडो पाडनै लूटी जावै। अनाड़ी लोग माफी री राजनीति कोनी कर सकै। ओ काम खास कारीगरी मांगै।

राजनीति री माफी साव सात्विक सौदाबाजी है। इण में माफी देवणियो अर लेवणियो दोनूं पक्ष राजी रैवै। आप-आपरी दीठ सूं, दूजा करतां दूर री देख रैया हां! आ मान'र चालै। इण में वां नै आगा-नैडा भविष्य में लाभ निगै आवै नै लाभ रो सौदो तो राजनीतिवाळां नै जनता करतां ज्यादा सुहावै। मंदिर में दर्शन सारू लेण में लागोडी जनता भीड़ में धक्का-मुक्की हुयां सेली बात कै सरल भाव सूं माफी कोनी मांगै। पण लाभवादी नेता चुनावी टिकट री खींचताण में स्वारथ री डोर तूटतां पैली माफी मांग लेवै। यूं करनै जनसेवा सारू आगता चतुर नेता खुद रै शीलवान होवण रो सुख पण भोगै। अर जनता नै क्षमा-शील राखण री प्रेरणा देवण रो फरज ई निभावै। इण तरै सूं राजनीति वाळी माफी नेतावां नै मजारा मन रा लाडू जिमावै। इण सूं ठीक ऊंदी होवै है माफी री राजनीति। घणी वेळा राजनीति री माफी माथै माफी री राजनीति भारी पड़ जावै। जबरी हावी होय जावै। आ अबखी घड़ी बड़ी खतरनाक। आ स्थिति माफी-घोटाळा तक जावै। माफी-आतंक रो डंको बजावे। आवो, माफी री राजनीति रो परचो दरसावतां कीं संवाद देखां। अर जाणां-पिछाणां के माफी री राजनीति रा बाजार में सट्टाबाज कूण है! अर केडा-केडा है!

'थां तो आज तांई कदैई म्हारै कनै माफी मांगी कोनी! तो ई म्हैं आपनै हर वार माफ करतो रैयो हूं। अरे! थांनै तो थांरी भूल तक रो भान कोनी रैयो। पण म्हैं कणैई जतायो कोनी, कै म्हैं आपनै माफी दी है। अेकदम गुसदान वाळो म्होटो मन राख'र सदीव म्हैं ओ काम करियो है। अर आप हो कै आज म्हनै इत्ती सी 'क बात वास्तै साव चालू खाता में माफी मांगण री कैय रैया हो! अरे! धिक्कार है थांनै!'

'अरे भाई! म्हारा सूं भूल हुई, जणै ईज तो म्हैं सॉरी कैयो है! माफी मांग ली है! अबै फेर कांई करूं! ताळी दोनूं हाथां सूं बाजै। मानां कै माफ करणो बड़ी बात है! पण माफी मांगणी तो घणी बड़ी बात है! म्हैं घणी बड़ी बात कर दी। तो आपनै बड़ी बात तो करणीज पडसी। अब ज्यादा तेरी-मेरी मत करो! नींतर...!'

'देखो सा, आप माफी मांगण रो केय रैया हो, सो तो ठीक है। पण म्हारै मांगण री आदत है कोनी! आपनै जचै तो माफी देय दो। म्हैं आपरो मान राखूंला! आपरी दियोडी माफी नै हिया सूं स्वीकार करुंला!'

इण संवाद-सैंपल सूं ठाह पड़ै कै माफी री राजनीति में सीदी तरियां माफी नीं मिळै। तिकडम सूं हासिल करण अर नटण रा नुस्खा चालै। इण में माफी झपटी-हडपी जावै। जरूरत पड्यां धाडो पाडनै लूटी जावै। अनाड़ी लोग माफी री राजनीति कोनी कर सकै। ओ काम खास कारीगरी मांगै। अैडो कलाकार होवण वास्तै नेसरमाई रो मोकळो अभ्यास जरूरी है।

खैर! राजनीति में वायरो अर ओट री मतलबी रणनीति अनुसार तेवर बदलता रैवै। पण सामाजिक जीवन में माफी मांगण-देवण रा सुभ काम में ढील राखणी ठीक नीं। क्यूं कै डेट अेक्सपायर हुयां पछै माफी बासी-बेस्वाद होय जावै।

मो. 9445260463

बुलाकी शर्मा री डायरी सूं-

पैला हिंदुस्तान ईमानदारी अर मिनखीचारै सारू ओळखीजतो

डॉ. लक्ष्मी सहगल

20 जुलाई, 2000

बेजा सुस्ती। उदासी। लिखण-पढण रो मन ई कोनी करै। दफ्तर में अरुचिकर बातां। बां नै ई सावचेती सूं सुणन रो ढोंग। बिचाळै हुंकारा। स्त्री-प्रसंगां नै लेय'र दफ्तर रा साथी इत्तै रस सूं बात करै जाणै स्सै सूं घणो आनंद आं बातां में ही है। लुगायां रै चाल-चरित्र माथै बातां करता बै स्यात आ बात चैतै ई कोनी राखै कै बां री मा, बैन-बेटी- घरआळी ई लुगायां ई है। बां रै चरित्र माथै कोई लांछन लगावै जणै!

दोस्तां है दबाव सूं जरूर लिखीज जावै। भाई राजेंद्र जोशी जी स्वतंत्रता सेनानी रघुवर दयाल गोइल री जीवणी लिखण सारू कदैई सूं आग्रह कर रैया है। संदर्भित सामग्री ही पूगायग्या। दो-तीन दिन पैला बैठ्यो पण पांच पानां सूं आगै कोनी लिख सक्यो। आज दिनूगै ओ तेवड़'र बैठ्यो कै जीवणी पूरी कर'र ई उठसूं। दफ्तर री छुट्टी लीवी। दिनूगै साढी नव बजी रै आसै-पासै बैठ्यो अर सिंझ्या री सात-साढी सात बजी तांई लाग्यो रैयो। बिचाळै जीमण में 10-15 मिनट जरूर लगाया। पक्को रैयो जणै 35-36 पानां री जीवणी लिखीजगी। इण रै छपण रो फैसलो परसूं जयपुर में हुवणो है। खास वाहक साथै राजेन्द्रजी आज पाण्डुलिपि जयपुर रवाना करवा दीवी है। म्हां दोनां रै नांव सूं छपणी है। दिनभर लिखण में लाग्यो रैवण सूं थकावट री ठौड़ खुद नै तरोताजा मैसूस कर रैयो हूं। लिखण सूं ऊर्जा मिलै, आणंद मिलै। दोस्तां रै आग्रह सूं लिखीज जावै। पण लिखण रो आग्रह करणिया भायला है कठै! म्हैं तो सगळां नै बां रै लेखन बाबत पूछतो रैवूं पण म्हनैं पूछणियो कोई भायलो कोनी। चंद्रजी भाईसाब जरूर लिखण सारू कैवता रैवै।

दैनिक नवज्योति म्हारो व्यंग्य पूगतै ई छाप रैयो है। 12 जुलाई नै भेज्यो अर 18 जुलाई रै अंक में लागग्यो अर बीं री छप्योड़ी कॉपी ई आज डाक सूं आयगी। ई महीनै में दो व्यंग्य छपग्या है। 'ट्रिब्यून' ई रचना पूगतै ई लगावै अर बीं री कटिंग डाक सूं भेजै। मानदेय ई टैमसर भेज देवै। टैमसर छापणियां नै ई भेजणो सही है। केई पत्र-पत्रिकावां इसी है कै ना पूग री सूचना देवै, ना स्वीकार-अस्वीकार री। बां नै भेज'र रचना खराब करणी है।

7 अगस्त, 2000

भारतीय बाल कल्याण परिषद, कानपुर कानी सूं फर्रुखाबाद में हरदर्शन सहगल साब रो सम्मान करियो गयो। इग्यारह सौ रुपिया, शॉल, प्रशस्ति-पत्र, पोथ्यां आद बां नै अरपण करीजी।

सहगल साब अर डॉ. राष्ट्रबंधुजी रै आत्मीय आग्रह नै टाळ नीं सक्यो अर म्हैं ई सहगल रै साथै गयो। राष्ट्रबंधुजी ई बार-बार फोन कर रैया हा। बाल साहित्य रै संवर्धन सारू राष्ट्रबंधुजी देस में घूम-घूम नै अलख जगा रैया है अर म्हारै ऊपर बां रो खास सनेव है।

सहगल साब अर म्हैं, 30 जुलाई नै हावड़ा ट्रैन सूं बहीर हुया अर 31 जुलाई रा दिनूगै 11-11.15 बजी रै आसै-पासै कानपुर पूग्या। बठै भदौरियाजी सूं मिलण सारू बां रै घरै गया। भदौरियाजी 'बिगुल' संस्था रै मारफत रिटायर्ड सैनिकां अर सैनिकां री विधवावां री सेवा कर रैया है। सुभाष रेजिमेंट में कैप्टन रैयोड़ा स्वतंत्रता सेनानी डॉ. लक्ष्मी सहगल सूं ई मिलण नै गया। भदौरियाजी रै घर सूं ई सहगल साब बात करनै बां सूं मिलण रो टैम लियो। बां च्यार बजी रो समय दियो पण म्हैं सवा चार बजी पूग सक्या क्यूंकै बा रै बंगलै री जाणकारी लैंवता-लैंवता टैम लागगी। लक्ष्मी सहगल जी आपरी बेटी सुभाषिनी अली रै बंगलै में बां रै साथै ई रैवै, जिका सांसद रैयोड़ा है। अेक रिक्सैआळै नै सहगल साब सुभाषिनी अली रो नांव बतायो जणै बो म्हानै कचैड़ी रै नजीक, सिविल लाइंस बां रै बंगलै छोड दिया। रस्तै में सहगल साब बतावता रैया कै लक्ष्मीजी रो जलम रो नांव लक्ष्मी स्वामिनाथन है। वां रो जलम 24 अक्टूबर, 1914 नै मद्रास में अेक ब्राह्मण परिवार में हुयो। बरस 1936 में बां बी. के. अेन. राव सूं ब्यांव करियो पण बो छव महीना ई रैयो, क्यूंकै राव साब घरेलु लुगाई रूप देखणो चावता जद कै बां रै मन में देश री आजादी री हूंस ही। राव साब सूं तलाक पछै बै स्त्री-रोग निदान में डिग्री लेयनै डॉक्टर बण्या। फेर सिंगापुर गया परा। बठै आं रो नेताजी सुभाष चंद्र बोस सूं संपर्क हुयो। बठै ई बां कर्नल प्रेम कुमार सहगल सूं ब्यांव करियो अर बै लक्ष्मी स्वामीनाथन सूं डॉ. लक्ष्मी सहगल बणग्या।

डॉ. लक्ष्मी सहगल झांसी रेजीमेंट री पैली महिला कैप्टन बण्या। बां नै अस्थाई हिंद सरकार में मंत्री रो दर्जा हासल हो।

सहगल 85-86 बरसां री हुवतां थकां ई दिनूगै आठ बजी सूं दुपारै अढाई बजी ताई क्लिनिक में मरीजां नै देखै। फीस फगत आठ रुपिया। गरीब अर जरूरतमंद लुगायां सूं फीस कोनी लेवै।

म्हे बां रै बंगलै पूग्या जणै नौकर म्हांनै मांय नै लेयग्यो। बैठक री खिड़कियां सूं फूलां रा पौधा अर बिरछ दीख रैया हा।

बैठक में मनभोवणा आजाद हिंद फौज री खास-खास घटनावां रा फोटू म्हांनै स्वतंत्रता आंदोलण री याद दिरावण लाग्या।

बैठक में बै पधारिया जणै अेकर तो म्हांनै भरोसो ई नीं हुयो कै जिकां रै बारै में आज तांई पढता आया हां, बै साक्षात दरसण देय रैया है। सौम्यता री सजीव मूरत। सुदर्शना। म्हें दोनूं बां नै गुलदस्तो भेंट कर नै चरण-रज लेवण सारू झुकग्या। बां रा चरण झाल्या म्हे कीं झुक्योड़ा रैया जणै बां रो मीठो-मधुर सुर सुणीज्यो- 'अरे भई ओ आंई कर रैया हो।'

'म्हारै जीवण री साध पूरी हुयणी आज आपरा दरसण करण री।' भावुक हुयनै म्हां पडूतर दियो।

चाय पीवता थकां बां सूं घणी ई बातां हुई। म्हैं पूछ्यो कै आप स्वतंत्रता आंदोलन रै इतिहासू दौर सूं गुजरिया हो अर आपरो नांव इतिहास में सोनलिया आखरां में मंडियोड़ो है। आप आज रै हिंदुस्तान रै मौजूदा दौर नै किण रूप मैसूस कर रैया हो।

डॉ. लक्ष्मी सहगल जी पडूत्तर दियो कै पैला हिंदुस्तान ईमानदारी अर मिनखीचारै सारू ओळखीजतो हो, पण अबै बो दौर खतम हुयग्यो लागै।

म्हैं फेरूं सवाल करियो कै इण बदळाव री वजै आप कांई मानो? आज री शिक्षा में कमी है कांई सुसंस्कारी बणावण में?

बां फरमायो कै कांई कैय सकां। जिकां नै दोय टैम रो भोजन नीं मिलै, बै ई आपरै पेट रै गांठ बांध'र टाबरां नै पढा रैया है। फेर ई बै ई चिंता में है कै अे पढ'र करसी कांई? सरकारी स्कूलां में ढंग सूं पढाई हुवै कोनी। निजी संस्थावां में शिक्षा गरीबां सूं दूर भोत महंगी है। केई तरह री फीस वसूलीजै, गरीब टाबर कियां पढै बठै।

सहगल साब कैयो कै आपरै अर नेताजी रै बारै में म्हैं भोत बांच राख्यो है। नेताजी रो कैवणो हो कै धरम-जात-पांत रो भेद मिटाय'र सगळां नै इकसार सस्ती अर चोखी शिक्षा देवणी

म्हें फेरूं सवाल करियो कै इण बदळाव री वजै आप कांई मानो? आज री शिक्षा में कमी है कांई सुसंस्कारी बणावण में?

बां फरमायो कै कांई कैय सकां। जिकां नै दोय टैम रो भोजन नीं मिलै, बै ई आपरै पेट रै गांठ बांध'र टाबरां नै पढा रैया है। फेर ई बै ई चिंता में है कै से पढ'र करसी कांई? सरकारी स्कूलां में ढंग सूं पढाई हुवै कोनी। निजी संस्थावां में शिक्षा गरीबां सूं दूर भोत महंगी है। केई तरह री फीस वसूलीजै, गरीब टाबर कियां पढै बठै।....

आप साहित्यकारां नै जन चेतना जगावण रो काम करणो चाइजै। दूरदर्शन रो बधतो कुप्रभाव साहित्य नै पाठकां सूं दूर कर रैयो है, दूजी चिंता आ कै जनचेतना जगावणआळो स्तरीय साहित्य पाठकां तांई पूग नीं रैयो है। धन प्राप्ति री आंधी दौड़ सूं मुगत हुयां बिना बदळाव संभव कोनी। घणकरा लोग तो बातां बणावण में ई बगत जाया करता रैवै। साहित्यकारां नै फील्ड में उतरणो पड़सी, जणै ई देस खुसहाल बणैला।

है, गरीबां नै भूमि दिरावणी है। पण आजादी पछै ओ निजर कोनी आवै।

बां पड़ूत्तर दियो कै कैवण नै तो अबै ई सगळा अै बातां ई कैवै पण अमल में लावणिया कोई कोनी। फकत 'सही' कै 'चोखो' कैवण सूं सुधार हुवणो कोनी। पंचवर्षीय योजनावां बणै। सरकारां आवै। नितूका सगूफा छोड़ीजै। योजनावां बणै पण बां रो मूल्यांकन कोनी हुवै। योजनानां रो क्रियान्वयन क्यूं कोनी हुय रैयो है, इण माथै विचार ई कोनी करीजै। सांसदां नै आपरै क्षेत्र में अेक करोड़ रो विकास कार्य करावण री छूट है पण ओ देख्यो कोनी जावै कै बै काम कित्ता जनोपयोगी है, गरीबां सारू कित्ता फायदैमंद है। मधु दंडवते जद मंत्री हा, तद बां नेताजी सुभाष बोस माथै कार्यक्रम तय करिया हा पण अफसोस बां माथै कोई कार्यवाही कोनी हुई।

सहगल साब अचंमै सूं आंख्यां फैलावता बोल्या- फेर अै अेक करोड़ देवणा गळत है।

म्हैं हंस्यो- गळत कियां है, टीवी माथै अेक सीरियल में लोगां नै करोड़पति बणाइजै है नीं।

लक्ष्मी सहगलजी ई हंसण लाग्या अर बोल्या कै सीरियल री ई चोखी याद दिराई थां। 'कौन बनेगा करोड़पति' कार्यक्रम लोगां री धनेषणा नै साम्हीं राख रैयो है। गरीब बापड़ो भरपेट भोजन कोनी कर सकै अर अठीनै करोड़पति बणण रा सपना बेचीज रैया है।

- म्हां साहित्यकारां नै कांई करणो चाइजै?

बां पड़ूत्तर दियो कै बै कर्म माथै भरोसो राखै। आप साहित्यकारां नै जन चेतना जगावण रो काम करणो चाइजै। दूरदर्शन रो बधतो कुप्रभाव साहित्य नै पाठकां सूं दूर कर रैयो है, दूजी चिंता आ कै जनचेतना जगावणआळो स्तरीय साहित्य पाठकां तांई पूग नीं रैयो है। धन प्राप्ति री आंधी दौड़ सूं मुगत हुयां बिना बदळाव संभव कोनी। घणकरा लोग तो बातां बणावण में ई बगत जाया करता रैवै। साहित्यकारां नै फील्ड में उतरणो पड़सी, जणै ई देस खुसहाल बणैला।

सहगल साब पूछ्यो कै ओजूंलग नेताजी रै जीवित हुवण री बातां उठती रैयी है। जापान रै जिकै मिंदर में अस्थियां राख्योड़ी है, बीं माथै ई अंदेसो करीज रैयो है। आप रो कांई मानणो है?

बां साफ सबदां में कैयो कै आयोग कै कमीशन बैठावण री जरूरत ई कोनी। चिकित्सा रै क्षेत्र में आज मोकळा नवाचार हुय रैया है। डीअेनअे जिसा प्रयोगां सूं सगळो मालूम करियो जाय सकै। नेताजी रा वंशज आज ई मौजूद है। सरकारां री साची मंशा हुवणी चाइजी।

लक्ष्मी सहगत जी सूं बातां करतां मन तिरपत ई नीं हुय रैयो हो पण म्हांनै फर्रुखाबाद सारू सिंझ्या छव बजी री गाड़ी पकड़नी ही। बां रा चरण-स्पर्श करनै बठै सूं विदा हुया अर सीधा रेलवे स्टेशन पूग्या। रात रा ग्यारा बजी फर्रुखाबाद पूग्या। म्हांनै लेवण सारू संस्था रा साथी आयोड़ा हा। चोखै होटल में ठैराया। चोखी मान-मनवार करीजी।

अेक अगस्त नै आर्य माध्यमिक विद्यालय में बालसाहित्यकारां अर बालकां काव्य-पाठ करियो। कार्यक्रम में राज्य री मंत्री महोदया ई खास मिजमान रूप हाजर हा। अेक बालिका पूजा दीक्षित री कविता ओजूं दिमाग में घूम रैयी है। 'सारे जहां से अच्छा फर्रुखाबाद हमारा' कविता रै मारफत बा बच्ची आपरै स्हेर री टूट्योड़ी- फुट्योडी सड़कां, बिजली-पाणी री समस्यावां आद नै मंत्री महोदया रै सामनै राखण रो हौसलो दिखायो अर करतल ध्वनि सूं सगळां बीं नै खूब आसीस दीवी। कवि मंत्रियां सामनै इत्तो खुल'र कैवण रो साहस कोनी राखै, जिको बीं टाबर में देख्यो।

सिंझ्या नै खत्री धर्मशाला में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन की जयंती मनाइजी, जिण में राजर्षि टंडन नै 'खत्री समाज रा महापुरुष' बतावता बां रै अवदान रो सिमरण करीज्यो। म्हनै भोत पीड़ हुई कै आखै देस का पूजनीक महापुरुष राजर्षि नै 'खत्री समाज' तांई संकुचित कर रैया है बां रै समाज रा लोग। बठै रै अखबारों में अेक खबर बांच'र ई मन व्यथित हुयग्यो। खबर ही-

वैश्य समाज कानी सूं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त री जयंती मनावण री। राष्ट्र-पुरुषां नै जातीयता रै खेमां में बांटणआळा अै लोग कित्ती हीण-मानसिकता रा है। राजर्षि टंडन हुवो कै राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सगळां वास्तै पूजनीक है, प्रेरक है फेर आं नै जात-बिरादरी में बांटनै आं रै विराट व्यक्तित्व-कृतित्व नै संकुचित करणो कित्तो गळत है। इसा महापुरुषां नै धरम-मजहब कै जात-बिरादरी में बांटणो सरु कर देसां जणै आं रै राष्ट्रीय व्यक्तित्व साबुत कियां रैय सकैला?

सहगल साब अर दूजा साहित्यकारां रो सम्मान अेक प्राइमरी स्कूल में विद्यार्थियां री मौजूदगी में करीज्यो। सह?गल साब रै सिरजण माथै बोलण री म्हारै मन में ही पण वक्तावां री सूची पैला सूं ई तय ही। डॉ. राष्ट्रबंधुजी, प्रतीक मिश्रजी आद सम्मानित लेखकां रो संक्षिप्त परिचय दियो।

बठै केई लेखकां सूं पैली बार मिलणो हुयो अर केई लेखकां सूं फेरूं मिलनै खुसी हुई।

चोखी यादां साथै म्हैं फर्रुखाबाद सूं बीकानेर वास्तै रवाना हुयग्या। रस्तै में म्हां दोनां बिचाळै घणी ई बातां हुई। गाड़ी में म्हनै नींद आयगी जणै सहगल साब टोक्यो कै म्हैं जाग रैयो हूं, थे सोयग्या। म्हैं हंस'र बोल्यो- आप साठ पार हुयग्या नीं, जणै नींद कमती आवै।

बै किसा कमती पड़ता। आपरी उमर रो बचाव करता कैयो कै उमर अर नींद रो कोई संबंध कोनी। म्हनै सरु सूं ई नींद कमती आावै।

यादगार जातरा रैयी सहगल साब साथै।

(बाकी आवतै अंक में)

लक्ष्मी सहगत जी सूं बातां करतां मन तिरपत ई नीं हुय रैयो हो पण म्हांनै फर्रुखाबाद सारू सिंझ्या छव बजी री गाड़ी पकड़नी ही। बां रा चरण-स्पर्श करनै बठै सूं विदा हुया अर सीधा रेलवे स्टेशन पूग्या। रात रा ग्यारा बजी फर्रूखाबाद पूग्या। म्हांनै लेवण सारू संस्था रा साथी आयोड़ा हा। चोखै होटल में ठैराया। चोखी मान-मनवार करीजी।

डॉ. नीरज दइया, श्रीमती कमला सहगल, हरदर्शन सहगल अर बुलाकी शर्मा

रंगा रै तैंवार माथै आपरी निजर सनीमा रा रंग

अरविंद आशिया

यूं आपां रौ देस तीज-तैंवारां रौ देस है पण सनीमौ बां तीन तैंवारां नै बधता दरसाया क्यूं कै अे तीनूं भावना प्रधान है- अेक राखड़ी, दूजौ करवाचौथ अर तीजौ हौळी। हालांकि हरेक तैंवार रै लारै कीं न कीं धारमिक कथानक है, पण तो भी आं रौ सामाजिक रूप बधतौ मैताऊ है। होळी री सब सूं बड़ी बात आ ईज है कै दुसमण भी दुसमीचारौ भूल'र दोस्त हुय जावै अर जरूरी भी है क्यूं कै करोड़ौ बरसां सूं थिरपियोड़ै इण ब्रह्मांड में लाखूं बरसां सूं वनस्पति अर जीव जगत है अर फकत 60-70 बरस मानखै नै काढणा हुवै तौ पछै इत्ती दुसमणी क्यूं? अर होळी आपनै दुसमणी रै ईगौ सूं बारै आय'र दोस्ती कांनी बधण रौ मौको देवै।

विदेसां में ई'ज सच तौ होळी नीं'ज मनै पण जठै भी भारतीय समुदाय रैवै बठै होळी मनावण रौ दस्तूर है। चायै वौ बरतानिया हुवौ कै पछै अमरीका कै कोई दूजौ देस। पण जे भारतवंसी कठैई रैय रह्या है तौ बै होळी जरूर मनावै। यूं अेक तैंवार अैड़ौ जरूर हुवै जकौ होळी जिसौ इज हुवै, केई देसां में मनै... भलां ई बठै होळी मंगळावण री प्रथा नीं हुवै पण रंग-रमण री अर बैर भूल'र गळै मिळण री प्रथा तौ कायम है ई'ज। नेपाल अर श्रीलंका में तौ आपां रै जिसी'ज होळी मनै, म्यनमांर में औ तैंवार मैकांग रै नांव सूं मनै... तौ थाईलैंड में सांग्क्रान रै नाम सूं। मॉरिशस में तौ बसंत पांचम सूं सरू हुवै औ तैंवार सो होळी मंगळावण रै सागै ई खतम हुवै। स्पेन अर इटली में टमेटिनौ रै नाम सूं औ तैंवार ओळखीजै। जिणरी झलक आप 'ये जिंदगी न मिलेगी दोबारा' में भी देखी होसी।

हालांकि इसौ नीं है कै सगळा भारत में होळी मनै इज, उतराखंड रा रूद्र प्रयाग रा दो गांव- क्विली अर कुरझान में होळी नीं मनै। क्यूंकै बठा री देवी त्रिपुरासुंदरी नै शोर पसंद नीं है। गुजरात रा बनास कांठा में अेक गांव है- रामसन, जठै

अेक श्राप रै कराण लारलै दोय सौ बरसां सूं होळी नीं मनै। इसी दो-चार जगै और भी हुय सकै पण आखै देस अर खासकर उत्तर भारत में तौ होळी जोरशोर सूं मनै है इज।

हिदी सनीमा में गब्बरसिंग रै डायलॉग 'होली कब है.. कब है होली.. कब..?' रा अजै तांई मीम बणै। हिंदी सनीमा में केई फिल्मां तौ होळी स्क्रिप्ट रौ टर्निंग पाइंट है जठै सूं फिल्म गति पकड़ै। 'शोले' में बीं होळी रै सागै इज पैली वेळा जय वीरू अर गब्बर रा साथी आमी सामी हुवै सो फिल्म खत्म हुया ई छूटै। फिल्म 'दामिनी' में भी होळी माथै नायक रा दोस्तां रो करियोड़ौ गैंगरेप टर्निंग पाइंट है। बठै सूं कोर्ट रूम सीन सरू हुवै सो फिल्म रै आखिर तांई चालै। फिल्म 'मोहब्बतें' में भी रंगां सूं होळी खेलण री परमीशन मिळियां पछै इज फिल्म गति पकड़ै। 'बांगवान' रौ भी होळी दृश्य आपनै याद हुवैला जिणमें होळी रै पछै इज टाबर आपरा मां बापां नै अलग राखण री जुगाड़ करै।

सित्तर अस्सी रै दशकां में जद टीवी इतरौ हावी नीं हुयौ हौ। खासकर प्राइवेट चैनल नीं आया हा, तद होळी रै पूरै दिन रेडियौ में होळी रा गीत बाजता। गांव-खेड़ा में मिनख खाख में रेडियौ घाल्यां आं गीतां रौ आणंद लेवता। दो फिल्मां इसी भी है जां में होळी रै दिन रौ प्रयोग भय उत्पन्न करण नै हुयौ है। 'गोलियों की रासलीला' में जद नायक नायिका रै घर में जाय'र जकौ के खानदानी दुश्मण हुवै... नायिका रै सागै होळी रमै तद दर्शक डरै कै अब जाणै कितरौक तौतक होसी। यूं रौ यूं 'डर' फिल्म में जद शाहरूख खान होळी रै मिस नायक नायिका रै घरां तांई पूग जावै तद दर्शक हॉल में कुर्सी रौ हत्थौ पकड़'र थोड़ौ आगै सिरक'र बैठै कै अब कांई होसी?

होळी माथै जितरा भी गीत पिक्चराइज हुया बां में केई इसा है जां नै देख्यां आंख्या तिरपत हुवै। पैली वेळा मेहबूब खान री फिल्म 'औरत' में होळी रा सीन हा पण ब्लैक-अेड-व्हाइट रौ जमानौ हुवण रै कारणै रंग नीं पिक्चराइज हुया अर तद मेहबूब खान 'मदर इंडिया' में पाछी होळी फिल्माई अर रंग उडाया। मदर इंडिया रौ 'होली आई रे कन्हाई रंग छलकै सुना रे जरा बांसरी' जित्तौ सुणन में मीठौ है बित्तौ इ ईंरौ पिक्चराइजेशन कमाल है। यूं इज रणवीर कपूर अर दीपिका पादुकोण री फिल्म 'जवानी दीवानी' रौ गीत 'बलम पिचकारी जो तूने मुझे मारी' आनंदित करणियौ गीत है।

इण मौके म्हैं आपनै अेक खास फिल्म याद दिरावणी चावूं जिणरौ नाम है- 'होली'। केतन मेहता री निर्देशित बरस 1984 में बणी आमिर खान अभिनीत आ फिल्म हिंदी सिनेमा में मील रै पत्थर री औकात राखै। स्टूडेंट्स वर्सेज टीचर्स रै संघर्ष री आ कथा युवा विद्रोह नै परिभाषित करै। इण फिल्म नै बेस्ट सिनेमेटोग्राफी रौ राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिळियौ हौ।

बॉलिवुड में होळी खलण री परंपरा राजकपूर स्टूडियौ री ही पण टैम रै सागै सगळी बातां झीणी पड़गी। आज भलै ई कोई खानदान होळी री मेजबानी नीं करतौ हुवैला पण तो भी हिंदी सनीमा में होळी अेक खास जगै राखै।

मो. 9413318066

कल्याणसिंह राजावत

होळी गावण दे

फूलां री निछरावळ करतो फागण आयो रे
होळी गावण दे
हा रे होळी गावण दे रे, चग बजावण दे
होळी गावण दे
वायरियो गूंगो बण पग में पायल बांध्या नाचै ओ
धरती री कूंपळ-कूंपळ में मैंदी राचै ओ
रग चढावण दे
हा रे रंग चढावण दे, रे रंग उडावण दे
होळी गावण दे
काजळ पाड़ै कोयलडी तो मैंदी मोवन धोळी ओ
पगल्या मांडै पचरगी अर नाचै टोळी ओ
घूमर घालण दे
हा रे घूमर घालण दे, रे धमचक माचण दे
होळी गावण दे
गांव गुवाडी अळियां-गळियां चंग रगीला बाजै ओ
छैला देवै ताल रसीलो जोबन लाजै ओ
रस बरसावण दे
हा रे रस बरसावण दे, रे रूप रिझावण दे
होळी गावण दे
अम्बर रै आंगणियै चांदो आवै तारा हेलै ओ
धरती पर ढोलां रै ढमकै डंडिया खैलै ओ
गै'र रचावण दे
हा रे गै'र रचावण दे, रे नेह बधावण दे
होळी गावण दे
परभातै सूरज बनड़ोजी सरवर मुखड़ो झांकै ओ
मुजरा देती जाती सांझ गुलालां नांखै ओ
रथड़ो हांकण दे
हा रे रथड़ो हांकण दे, रे हिंगळू नाखण दे
होळी गावण दे...!

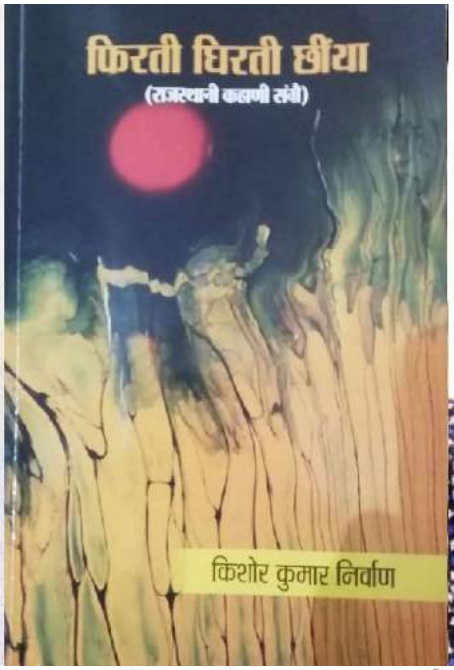

बास-गळी री कहाणियां - 'फिरती-घिरती छिंया'

पूर्ण शर्मा 'पूरण'

'फिरती-घिरती छिंया' कहाणी-पोथी मांय किशोर कुमार निर्वाण री कुल तेरहा कहाण्यां है। अै कहाण्यां कोई ठाडै कैनवास री जरूरत मैसूस कोनी करै। आपरै छोटै-सै गिड़दाव मांय ई इत्ती डूंगाई राखै कै पाठक नै आपरी कहाण्यां लागै। अमूमन ओ मानीजै कै रचना रचनाकार रै सुभाव री आरसी हुया करै। तो ईं विचार सूं अै सगळी कहाण्यां किशोर कुमार निर्वाण रै सुभाव बरगी कहाण्यां है। लिखारै आं नै इत्तै निस्तावू भाव सूं परोटी है कै अै भोळी सी लागै.... जाबक बेवळ। जको है, बो है। छोला-छांटी कतैई कोनी।

पोथी री पैली कहाणी है, रुखाळो। कहाणी रो नायक आपणी ऊपरली बात री साख भरै। गाम रो जीव गिरधारी गामेती तो है पण मन मांय अछंट ऊपसेड़ै भाव रो बो काईं करै। कुअै अर कुअै री ढाब रुखाळतां बीं रो बेवळ मन जे आयेड़ा जातरू सेठां रै दिखायेड़ा सुपना मांय भरमीजै तो? बो तुरताफुरती आपरी टाबरी नै लेय सेठां साथै हुय लेवै अर बां री नौकरी करण लाग जावै। पण मन तो मन हुवै। बो मन जको सुपना रो भुळायेड़ो सेठां साथै हुय लेवै पण बो ई सागी मन थोड़ा सा दिनां पछै गाम खातर तुड़ावण लागै अर भेळ मिलतां ई स्प्रिंग दाईं पूठो उछळनै गामै आ पूगै। आ कहाणी बियां तो गाम अर स्हैर री कहाणी लागै पण असल मांय आ गाम-स्हैर री कोनी, आ तो मन री कहाणी है। मन जको हजार बंधा नै ई कोनी मानै, बीं री कहाणी है। मन जको कूटीजतो-पींचिजतो खुद नै मारबो करै पण कठैई अेक तासू हरियो राख सकै, बीं री कहाणी है।

किशोर कुमार निर्वाण री आं कहाण्यां मांय कथ्य रो घणो पसराव कोनी अर ना घटनावां री बोहळ। बरणाव सैली मांय चपक-चपक चालती कहाण्यां बिना किणई अेलाण अर झंडाबरदारी रै आपरै लख ताईं पूगती दीसै। कहाणी रो असल लख तो पाठक हुवै अर इयां अै पाठक रै मेळू कहाण्यां है। पाठक-मेळू अै कहाणी पाणी सरीखी अर निमळी है कै पाठक कनै पूगतां ई आपरो सो कीं सूंप देवै। 'सुगनो माड़ो तो कोनी' कहाणी मांय सुगनै री रामरुमी करणै रो स्टाईल हुवै चायै होळी रै दिन फाग खेलण सारू धक्को..... कहाणी रै नैरेटर नै अछंट अेक भैय आवै अर बीं री सोच कठैई भीतर कानी जा मुड़ै। बीं नै सुगनो माड़ो मिनख लागै। कठैई फाग खेलण रै मिस काळमस नी मसळ देवै। मटो उधार पीसा मांगै अर मखौल करै कै ज्हैर खायस्यूं। साच्याणी खाय लेयसी तो? टोगडियै मान गंडक राखै, जे फींच पड़ा देयसी तो? भैय रो काईं मूंह। सोच सूं बत्ती नाड़ चकै। पण जद कहाणी रै छेकड़ मांय सुगनो नैरेटर री जोड़ायत रै ऑप्रेसन खातर आपरी बेचेड़ी भेडां रा पीसा सूं इमदाद करै तो सगळा भैय कूड़ा पड़ जावै। साच साही अठै कूड़ पग कोनी रोप सकै। मिनख रो भीतरलो साच ई तो असल साच हुवै..... बारै री दीखत सूं अपूठ। पोथी मांय सगळी कहाण्यां अेक सूं अेक चढती है, चायै बा 'सांप-सीढी' हुवै चायै 'धरमै रो सुपनो', 'टिगट' अर 'गिरज रो खातमो' पण अबैं आपां बात करां, पोथी री सिरै नांव कहाणी 'फिरती-घिरती छींया' री। कहाणी री सरूआत इयां हुवै, 'आज टाबरां नै फेरूं अेक नवो तमासो लाधग्यो हो। चतरो दादो आज अेक आदमी रै थाप मेल्ह दीन्हो हो। वो आदमी रोळा मचावै हो अर चतरो दादो बीं री गिच्ची झालै हो।' कहाणी चतरै दादै री है। मतलब बूढै माणस री है। मतलब कहाणी गाम री है पण गाम री हुवै चायै स्हैर री, कहाणी तो साच री है। ओ साच सैंग ठौड़ अेकसो है। बुढो हुवणो नकारा हुवणो तो मानीजै ई मानीजै साथै बीं नै कठैई ठौड़ भी कोनी देयिजै। बो घर रा कूणा-कचूणा रूड़बो करै। बियां तो आ कहाणी समाज मांय आज बूढां री जकी दुरगत हुय रैयी है बीं सारू लागै पण सगळा बूढियां सूं अळगी असल मांय आ तो चतरै दादै री जबरी कहाणी है।

मो. 9828763953

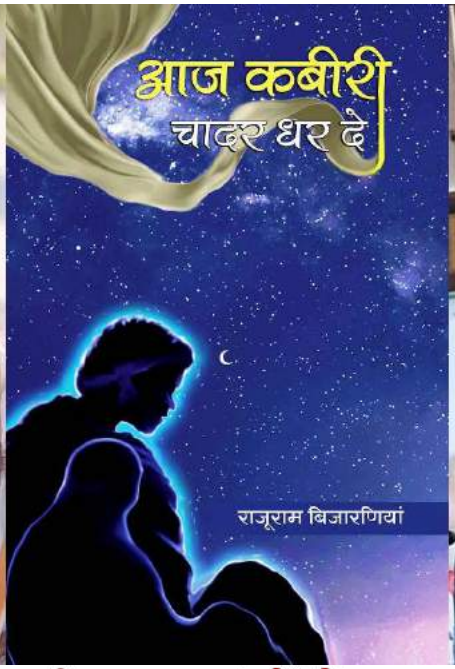

बिजारणिया री गजलां में ठेठ माटी री सुवास

किरण बाला 'किरन'

युवा रचनाकारां मांय कवि राजूराम बिजारणिया अेक ठावौ नांव। मिनखपणै अर जीया जूण रा कवि राजूराम बिजारणिया आपरै नवै गजल संग्रह- 'आज कबीरी चादर धर दे' रै मारफत राजस्थानी कविता रै इतिहास में अेक नुवां भाव रो खजानो सूंपै। आज रा समै में कविता लिखणो कत्तो बको वेईग्यो या वात अेक सांचो कवि ही जाण सकै। यूं तो घणी कविता लिखणवाळा है पर कविता रो मरम पैचाणवा री समझ कित्ता में बची है या खास उल्लेखजोग बात है। यो कविता रो संक्रमणकाल चाल रियो है। सगली कविता जुड़ री है अर नुवीं पैदा वेई री है। कविता री जूण जिंदा राखणी अेक चुनौती है। इसा समै कवि राजूराम बिजारणिया रो मातभाषा रो गजल संग्रै आपरी ठावी उपस्थिति दरज करा रियो है। राजू राम बिजारणिया ठेठ मिनख भाव रा अर्वारै सुख-दुख रा कवि है। इण संग्रै मांय अनेक रचनावां में घणी आछी भाव-भंगिमा सबदां री रूपाळी माळावां मांय गूंथी है कि अेक-अेक मोती माणक ज्यूं है। इण संग्रै री हरेक गजल रा भाव घणा सांतरा है।

आप सबूं पैला'ई केई दी दो, कवि रै मन री मरोड़ उजागर वेई री है। 'टुकड़ां में जिनगाणी क्यूं/ लूल्ही, लंगड़ी काणी क्यूं/ दे दाता बादल पूरो/ टोपां-टोपां पाणी क्यूं'

सब मिनखां रा मन ने जुड़वा रे खातर अतरी सोणी वात राजूराम जी कैवै कै 'आज कबीरी चादर धर दे/ का सगळा मन अेकल कर दे/ मैल मिटावै आभै उड़ता/ पळ-पळ करता अेड़ा पर दे।' कवि राजूराम ठाम-ठाम मन खोल'र रख दी दो। सगळा विसय नै आपरी लेखणी में जिग्या मिली है अर राजूराम जी सगळा रै सागै न्याव करता चाल्या। इण संग्रै नै भणता बगत रैला में वैता जावां क्यूं लागै, रुकवा रो काम कठै ई कोनी।

परिवार समाज रै अलगाव रै रीत री वात कवि राजूराम जी यूं कैवै- 'देख मिनख री बातां देख/ न्यारी-न्यारी जातां देख/ अेक भींत है घणां घरां री/ रोज बदलती छातां देख।' कवि प्रेम री कोमलता नै कवि प्रेम हूं घणी कोमलता रै सागै लिखै- 'प्रेम रो रंग कसुमल है/ डूबी कितरी मूमल है/ करड़ाई रो काम नहीं/ इण री रंगत कोमल है।' मा रा ऊपर तो सगळां लिखे पण राजूराम जी पिताजी रे भाव री वात अतरी चोखी मांडी के जीव में उण्डी उतरगी- 'थां सूं मारो नांव पिताजी/ जाणै सगळो गांव पिताजी/ जद बावड़ियों ताप दिखावै/ कर दे वो थे छांव पिताजी/ थांरो करज कदी नीं उतरै/ कितरा धोऊं पांव पिताजी।'

आपरो यो गजल संग्रै जदि हाथ में आयो अर इण नै बांचवा लागी तो मन मोवणी रचनावां मन मोइ लीदो। मायभाषा री अतरी सांतरी रचनावां री उडीक ही। यो संग्रै घणो सरावण अर अनुसरण जोग है। हियेतणांऊं वदई आपनै। रचनाकार आजरा समै रा सोशल मीडिया ऊपरे भी इण तरेऊं कियो- 'डीपी री तस्वीर बदळती घड़ी-घड़ी/ लाइक अर कमेंट बरसता झड़ी-झड़ी/ कैवण नै तो फॉलोअर री कमी नहीं/ घर री माळा खिंडती जावै लड़ी-लड़ी।' गाम छोड़ने सेर गया भाया रै खातिर राजूराम जी रो मन पसीजै अर घर वारा री पीड़ यूं कैवै- 'कितरी ताळ उडीकां अब तो आ भाया/ गम रै मार गदीड़ा खुशियां ला भाया/ खावण ने तो खाई कसमां गिण-गिण नै/ जे खावै तो गिट-गिट गमड़ो का भाया।'

भासा में ठेठ देसज भासा री सुवास है, मन में मीठो-मीठो भाव पैदा करै। जिका कैवै कै गजल फगत उर्दू मांय ई संभव हुवै बां नै राजस्थानी री आ पोथी बांचणी चाइजै। राजस्थानी गजल विधा री आपरी अेक लूंठी परंपरा रैयी है अर उणी परंपरा रै विगसाव मांय आ अेक उल्लेखजोग पोथी कैयी जावैला। म्हारी घणी सुभकामनावां आपनै यो संग्रै 'आज कबीरी चादर धर दे' साहित्य जगत में ऊंचो मान देवै।

मो. 9462514882

अबै म्हारी बारी

सवाल रै लारै खोज-खबर करणी चाइजै...

भारतीय साहित्य में ग्यानपीठ पुरस्कार रो घणो महातम मानीनै। बरस 2023 रो ओ पुरस्कार गुलजार (संपूर्ण सिंह कालरा) अर जगतगुरु रामभद्राचार्य नै भेळै घोसित करण री खबरां माथै न्यारा-न्यारा विचार अर राय आपां साम्हीं आई। कोई कैयो ओ ठीक हुयो अर कोई कैयो ओ ठीक कोनी हुयो। तो कोई कैयो दोवां नै भेळै देवणो गळत है। कोई इयां पण कैयो कै दोनूं ई साहित्य सूं सीधा जुड़ियोड़ा लेखक कोनी। पण साच ओ है कै आं दोनां हस्तियां नै आखो जगत जाणै।

फिल्मां सूं गुलजार रो नांव चावो हुयो अर बां उर्दू साहित्य रै सीगै लूंठो काम करियो है। पद्मभूषण सूं सम्मानित गुलजार नै तो देस-विदेस रा केई नामी पुरस्कार अर सम्मानां साथै साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2002 (उर्दू खातर) ई मिल्योड़ो है। इणी ढाळै चित्रकूट में तुलसी पीठ रा संस्थापक पद्म-विभूषण सूं सम्मानित रामभद्राचार्य नामीहिंदू अध्यात्मिक गुरु-लेखक रूप संस्कृत साहित्य मांय मोकळो काम करियो है। च्यार महाकाव्य अर लगैटगै 240 सूं बेसी पोथ्यां रा सिरजणहार रामभद्राचार्य री रचनात्मकता रो ओ सम्मान है। बाळपणै सूं रामभद्राचार्य जी री आंख्यां रो रोसणी कोनी फेर ई बै बाइस भासावां अर साहित्य रो लूंठो ग्यान राखै।

सवाल उठावणा घणा सरल हुवै पण उठाया का उठिया सवाल रै लारै खोज-खबर करणी चाइजै। कोई पण पुरस्कार नै घोसित करण सूं पैली उण माथै घणो काम करीजै। सेठ-साहूकारां अर जेबी संस्थावां रा पुरस्कारां नै छोड़ दां, जिका 'तुम मुझे - मैं तुम्हें' री तरज माथै रीत निभावै।

ग्यानपीठ पुरस्कार खातर भारत रै संविधान री आठवी अनुसूची में भेळी बाइस भारतीय भासावां सूं हरेक भासा खातर तीन बरसां खातर तीन सदस्यां री एक समिति हुया करै। जिका नांव आवै बां री जांच करीजै अर पछै चयन बोर्ड तांई पूग्यां बां नांवां माथै भळै बै विचार कर'र कोई फैसलो करै। चयन बोर्ड में न्यरा-न्यारा विद्वान सदस्यां भेळै आबार प्रमुख साहित्यकार प्रतिभा राय जी है, जिका खुद ग्यानपीठ पुरस्कार विजेता है।

गुलजार अर रामभद्राचार्य जी भारतीय कविता रै इतिहास मांय जसजोग योगदान दियो, पण आं रै कवि-रूप नै इतरो मान-सम्मान साहित्य-इतिहास में कोनी मिल्यो। सम्मान मिल्यो पण एक नै सिनेमा जगत रै कारणै अर दूजै नै धरम-करम रै कारणै। गुलजार रा लिख्योड़ा केई गाणा आपां सुण्या, फिल्मा देखी पण रामभद्राचार्य रा तो फगत धरम माथै प्रवचन सुण्या हां। अबै कांई ओ जरूरी कोनी कै दोनूं कवियां री कवितावां री परख आपां खुद करां। कोई पण परख पगत किणी रचना नै बांचण सूं तो हुवै ई है, साथै-साथै उण भासा अर दौर रै दूजा रचनाकारां सूं उणा री तुलना सूं ई हुया करै। कांई दौड़भाग री इण जूण मांय आपां इत्तो बगत काढ सकालां। बगत काढणो तो चाइजै।

इण अंक रै साथै 'नेगचार' ई-पत्रिका रा दोय बरस पूरा हुय रैया है। आपरो सैयोग मिलतो रैसी। इणी उम्मीद साथै...

-डॉ. नीरज दइया

मो. 8619614360

आप लिख्यो...

♦ **प्रहलाद श्रीमाली** - 'नेगचार' रा अेक मार्च अंक सारू हार्दिक बधाई। विविधता सागै सामग्री महताऊ है। आपरी साहित्य चेतना रो अभिनंदन। संपादकीय में मायड भाषा पेटै जागरूकता प्रेरणादायक है। सामूहिक संघर्ष अर प्रयास रंग लासी। महान साहित्य साधक श्री सांवर दइया जी नै आप साहित्य-पुष्पांजली देय रैया हो। धन्य हो। शुभकामनावां।

♦ **डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू** - नीरज जी, आपरो अभिनंदन। कितरो सुंदर अंक बण्यो है, जका केई-केई रमूझणिया रंग पाना री क्यारियां में भरिया अर भाव हरिया किया है। भाषा पे बोलनो आछो लागो, संस्कृत तो सबा ने भाषाई कैवै, बोली रो पर्याय कठै! वाणी, वाचा, गिरा? पाणिनि सब सबद लोक रा मानै अर आपरा व्याकरण रा सांचा-जांचा सूं प्रयोग करण री बात कहे, उणनै आपां संस्कृत बोला। आप म्हनै पण उजागर किनौ, भुलायोड़ी पोथी री 'प्रश्नांकित' कविता देय'र याद दिळायो, ई कवितावां 'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ' अभियान रा मूळ स्वर है अर अभियान सूं खूब समझ पैली रा... आभार।

♦ **दीनदयाल शर्मा** - 'नेगचार' री नियमितता सारू घणी-घणी बधाई सा नीरज जी। टैम सूं पैली थारो काम कंप्लीट। भागमभाग री इण जिनगी में थांरी आ जिम्मेदारी सरावणजोग। समै मुजब आलेख। थारै भीतर आ आग जगती रैवै, म्हारी सुभकामनावां।

♦ **भंवरलाल सुथार 'सांचोरी'** - सरावणजोग काम।

♦ **कुमार अजय** - मोकळा रंग। लखदाद आप री खेचळ नै।

♦ **डॉ. सुखदेव राव** - बहुत बहुत बधाई।

सीख

थां सूं ई
सीख्यो है मौसम
इतराणो अर
चांद नखरा।

सूरज भी थां सूं ई 'ज
सीख्यो है तपणो
अर मेह
भांत-भांत सूं बरसणो।

ठाह नीं-
तूं किण सूं सीख्यो है
मांय-मांय घुटणो
अर बात-बिना बात
मुळकणो।

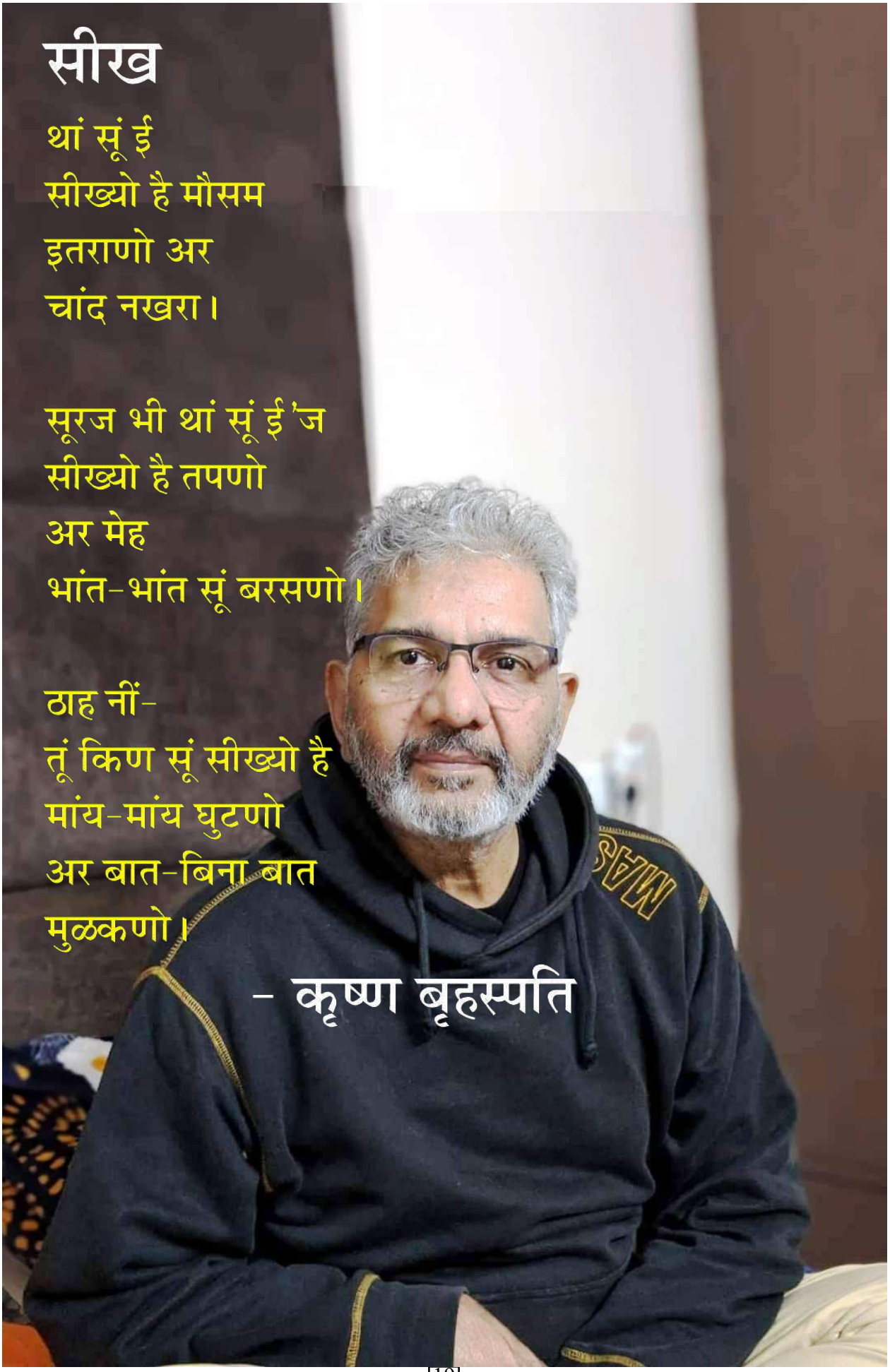

– कृष्ण बृहस्पति

Sapna Verma

FROM D/O TO W/O

From D/O to W/O
Perhaps
There is
This much difference only
As persists between
Glowing upcoming day
After nightfall
Or a dense dark night
After setting of the Sun.

GRASS AND WOMAN

A woman is like grass
Swaying and waving
Delicate and soft
Always keeps sticking
To roots
As soon as it tries to
Grow high
It is ripped
And again rooted in earth
She learns to live again
All afresh
She abandons habit of
Swaying and waving
The more she flourishes
The more she is ripped.

Translated by-

Rajni Chhabra

Multi-lingual Poetess & Polyglot